25 मार्च, 2023 को नेहरू युवा केन्द्र संगठन द्वारा आयोजित 14वें आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के समापन समारोह के अवसर पर माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

.....

उपस्थित मेरे युवा साथियों,

सबसे पहले आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनंदन और बहुत-बहुत बधाई।

अत्यंत खुशी की बात है कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने देश के नौ राज्यों में 14वें जनजातीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के आयोजन के लिए नेहरू युवा खेल संगठन को जिम्मेदारी दी है।

असम भी उन राज्यों में से एक है, जहां पांच राज्यों की लगभग 220 जनजातियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि इस कार्य़क्रम के आयोजन में सीआरपीएफ, बीएसएफ और आईटीबीपी ने भी सहयोग किया है।

आप सभी अपने-अपने क्षेत्र से लम्बी यात्रा पूरी करके यहाँ पर इकट्ठे हुए हैं। निश्चय ही आप लोगों ने कार्यक्रम के दौरान एक दूसरे के साथ अपने भावों का आदान-प्रदान किया है। इससे आप लोगों के मन-मस्तिष्क में एक नई उम्मीद और आशा की किरण जगी होगी।

साथियों,

इस प्रकार के कार्यक्रम देश की समृद्ध परम्पराओं को संरक्षित करने और सांस्कृतिक विरासत को संवारने में काफी मदद करता है। इससे एक ओर, युवाओं के आपसी संबंध मजबूत होते हैं, तो दूसरी ओर, उनके आत्म-सम्मान को भी बढ़ावा मिलता है।

हमारा भारत जाति, धर्म, वर्ण, भाषा सहित तमाम विविधताओं से भरा विशाल देश है। देश में एकता के सूत्र को अधिक मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना परम आवश्यक है। हमारी सरकार ने इस दिशा में जरूरी कदम उठा भी रही है। विभिन्न राज्यों के युवाओं और बच्चों के लिए अधिक कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम चलाए जाने से युवा एक-दूसरे के नजदीक आएंगे और अनेकता में एकता की भावना बढ़ेगी।

प्यारे युवा साथियों,

2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजाति देश की कुल आबादी के 8.6 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करती है। हमारे जनजातीय लोगों की भाषा, संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक-आर्थिक स्थिति भिन्न-भिन्न होती हैं और ये सभी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करते हैं।

देश के दूरस्थ प्रांतों में रहने वाली जनजातियों को देश के किसी दूसरे स्थान पर क्या हो रहा है, इसके बारे में भी विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं होती। यदि छात्र और युवा समुदायों को देश के दूसरे भागों में रहने वाले अपने सहकर्मी समूहों के साथ बातचीत करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलते रहें, तो निश्चित तौर पर उनके मध्य आत्मीयता और बंधुता और अधिक बढ़ सकती है।

इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के प्रोत्साहन के साथ "नेहरू युवा केंद्र संगठन" आदिवासी एवं जनजातीय युवाओं के विकास के लिए वर्ष 2006 से लगातार आदिवासी युवा आदान प्रदान कार्यक्रम का आयोजन करते आ रहा है। इस तरह के आयोजनों में दूर-दराज के ग्रामीण अंचल के युवाओं को देश की विविधता को समझने का मौका मिलता है।

साथियों,

प्रकृतिपूजक आदिवासी और जनजातीय समाज ने सदियों से जल, जंगल और जमीन को बचाए रखा है। हमारी राज्य सरकार इस समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने तथा उनके कल्याण के लिए समर्पित भाव से काम कर रही है। उन्हें अच्छी से अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा शिक्षा और रोजगार के भरपूर अवसर प्रदान करने के लिए बजट की राशि को बढ़ाया गया है। इन कल्याणकारी योजनाओं में आदिवासी और अनुसूचित जनजाति के छात्रों को सशक्त बनाने वाली योजनाओं, दीर्घकालिक और आसान ऋण देकर परिवारों की सहायता करना शामिल हैं। मेरी अपील है कि हमारे आदिवासी युवा इन सभी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएं और स्वयं के साथ अपने समाज को भी सशक्त करने का काम करें।

आप युवा गण "शक्ति एवं साहस" के पुंज हैं। आपमें वह सारे सामर्थ्य हैं जिनसे आप

अपने सपने को पूरा कर सकते हैं। देश की युवा पीढ़ी ही "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की परिकल्पना को सार्थक बना सकती है। इस दिशा में "कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम" एक मजबूत कड़ी का काम कर रहा है।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अपनी वाणी को यही विराम देता हूँ।

जय हिंद !